प्रकाशन तिथि : 15 जनवरी, 2021
प्रेषण तिथि : 19 जनवरी, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 21 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

जागृति के जनक की जयंती

आगामी 25 जनवरी को हम श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता की जयंती मनाने जा रहे हैं। एक ऐसे संघ के जनक की जयंती जो केवल शक्ति को जुटाने के लिए नहीं बना बल्कि शक्ति को जुटा कर उसे सदैव सात्विक बनाए रखने का भी उत्तरदायित्व निभाता है। 25 जनवरी एक ऐसी जागृति के जनक की जयंती है जो युक्ति बुद्धि का सामंजस्य कर सर्वकालिक आदर्श क्षत्रिय भगवान श्री कृष्ण का अनुकरण करने की ओर अग्रसर करती है। एक ऐसी जागृति जो विश्वात्मा के दृष्टिकोण से हमारी उपयोगिता को जानने, समझने, उसे पूर्ण करने की क्षमताएं जुटाने और फिर उसे पूरा करने की ओर प्रवृत करती है। एक ऐसी जागृति है जो कृतत्व को जागृत कर उसका ज्ञान गरिमा से विलय करवाती है और फिर उसे समर्पण की ओर प्रवाहित कर अंत में 'सूत्र तेरा नृत्य मेरा, यंत्री तू मैं यंत्र तेरा' को प्राप्त करवाने का सुनिश्चित मार्ग है। एक ऐसी जागृति जो कर्मयोग का पाठ पढ़ा कर सत्य साधना करवाती है, प्राणों में अमृत को छलका कर भक्ति भावना जागृत करती है। फिर दाता का श्रेय दिलाने वाली त्याग प्रेरणा की जागृति करवाती है और फिर जड़ चेतन को राह दिखाने वाली धर्म धारणा को स्थापित करती है और अंत में व्यर्थ द्वंद्व के भेद भुलाकर हमारी सुप्त एकता को जागृत कर स्थायी योग करवाती है, जोड़ करवाती है, मिलन करवाती है। यह मिलन ही तो है हमारे अस्तित्व का उद्देश्य है। इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन की सार्थकता सिद्ध करने वाली जागृति के जनक पूज्य तनसिंह जी की जयंती है 25 जनवरी और वे ही पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं, हमारे में अंकुरित हुई जागृति के प्रणेता हैं। आएं हम सब उन महामानव को कृतज्ञता पूर्वक नमन करें।

'कमजोर वर्ग का प्रतिनिधि बने फाउंडेशन'

(श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का तृतीय स्थापना दिवस मनाया)

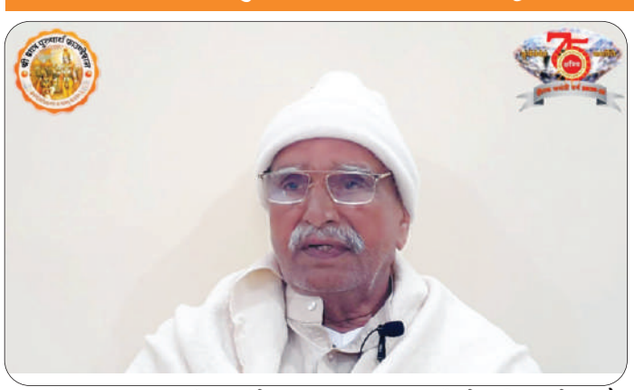

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन समाज के कमजोर वर्ग का विशेष ध्यान रखे, उनका प्रतिनिधि बने, उनको मान देवे, गले लगाए, उनके उत्थान के बारे में सबके साथ मिलकर कार्य करें। मैं सोचता हूं यही पुरुषार्थ है हमारे लिए, क्षत्रिय के लिए। 12 जनवरी को श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के तृतीय स्थापना दिवस के अवसर पर वर्चुअल माध्यम से अपने संदेश में माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि 12 जनवरी 2019 को सहयोगियों से विचार विमर्श के बाद श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की स्थापना इसीलिए की गई कि हमारी प्रतिभाओं का उपयोग सभी के लिए हो, क्यों कि क्षत्रिय का जीवन व्यवहार सभी के लिए होता है। क्षत्रिय तो सब कुछ भूलकर प्राणी मात्र के लिए मरता आया है। फाउंडेशन का अर्थ नींव का पत्थर होता है, यह मजबूत इतना हो कि सदियों तक विरोध अवरोध की परवाह किए बिना काम करता रहे। सच्चाई, धर्म, राष्ट्र के लिए कोई भी बलिदान बड़ा नहीं होता, यह सोचकर काम करना है। दो वर्षों में अलग-अलग लोगों को जोड़ा गया है, कोरोना काल में वर्चुअल अभियान चलाकर संवाद बनाया है। इसी प्रकार हर संकट में चट्टान बनकर खड़े रहें, ऐसा हमारा संकल्प होना चाहिए। आवश्यकता यह है कि हमारा यह सोच सदैव बना रहे, भूलें तो पुनः पुनः स्मरण करते रहें। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि समाज में अनेक प्रकार की समस्याएं आती हैं, सरकार से भी काम पड़ता है, व्यक्तिगत और सामूहिक काम भी है। पिछले दिनों में देख रहे हैं कि सरकारें उल्टा सीधा काम कर प्रभुत्व चाहती हैं, उसमें अपना विरोध जताते रहें। मुझे स्मरण है कि मुख्यमंत्री ने भी फाउंडेशन की बात सुनी है। आश्वासन भी दिए हैं। उपखण्ड अधिकारी, कलक्टर आदि के माध्यम से भी फाउंडेशन ने समाज की पीड़ा पहुंचाई है। लेकिन राजनीतिक वर्चस्व के बिना ताकत अधूरी है इसीलिए हमारे में से जो राजनीति में हैं या राजनीति में जा सकते हैं वे भी समाज की बात आगे पहुंचाएं। मैं समझता हूं कि विगत दिनों राजस्थान में अनेक अपमानजनक घटनाएं हमारे साथ हुई हैं और हमारी बात सरकारों द्वारा नहीं सुनी गई। हासिए पर लगाया जा रहा है हमको। हमारे मत के सहयोग से सरकारें बनती हैं लेकिन इनके सहयोग से हमारे काम नहीं हो रहे हैं। फाउंडेशन समाज की यह आवाज उठाए। परिश्रम करे, समय देवे, आर्थिक कष्ट भी उठाए, इसकी आवश्यकता है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

हीरक जयंती की तैयारियों का आगाज

(केन्द्रीय बैठक में बनी योजना)

श्री क्षत्रिय युवक संघ ने विगत 22 दिसम्बर को 75वें वर्ष में प्रवेश किया है, आगामी 22 दिसम्बर तक पूरा वर्ष हीरक जयंती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस पूरे वर्ष में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की रुपरेखा बनाने के लिए 9 व 10 जनवरी को बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में संघ की केन्द्रीय बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी संभाग प्रमुख एवं केन्द्रीय सहयोगी उपस्थित रहे। बैठक में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संस्था की जयंती व्यक्ति की जयंती से अधिक महत्वपूर्ण होती है क्योंकि संस्था का जीवन व्यक्ति के जीवन से कई गुना अधिक होता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ की 75वीं जयंती मनाने का अवसर मिल रहा है, इसीलिए इस पूरे वर्ष को उत्साह के रूप में मनाएं। पूज्य तनसिंह जी के विचार को घर-घर तक पहुंचाएं। बैठक में बनी कार्य योजना के अनुसार 22 दिसम्बर 2021 को जयपुर में लाखों लोगों की उपस्थिति में समारोहपूर्वक जयंती मनाई जाएगी। उससे पूर्व संभाग वार कुल 75 बड़े कार्यक्रम किए जाएंगे जिनमें स्नेहमिलन, पारिवारिक स्नेहमिलन, महापुरुषों की जयंतियां आदि शामिल हैं। हीरक जयंती के उपलक्ष में संघ की मासिक पत्रिका 'संघशक्ति' का हीरक जयंती विशेषांक प्रकाशित किया जाएगा। उसके लिए लेख लिखने एवं विज्ञापन के लक्ष्य लिए गए। इस वर्ष में एक नया कार्यक्रम 'संघ तीर्थ दर्शन' प्रारम्भ किया जाएगा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में उल्लेखित बीकानेर के शासक महाराजा गजसिंह और महाराजा सूरतसिंह के बारे में :

महाराजा गजसिंह बीकानेर के राजसिंहासन पर वि.सं. 1802 में बैठे। गजसिंह को बीकानेर का शासक बनते ही उनके बड़े भाई अमरसिंह और अन्य विरोधी सरदारों ने जोधपुर से मिलकर बीकानेर का घेरा डाल दिया। जोधपुर शासक द्वारा यह कहलाने पर कि यदि बीकानेर राज्य के दो भाग कर एक भाग अमरसिंह को दे दिया जाएं तो जोधपुर की सेना वापिस लौट जाएगी, प्रत्युतर देते हुए महाराजा गजसिंह जी ने कहलाया कि सूई की नोक के बराबर की भूमि को भी बीकानेर से पृथक नहीं होने दूंगा और कल प्रातः युद्ध भूमि में तलवार से शान्ति की शर्तें तय होंगी। प्रातःकाल होते ही महाराजा गजसिंह सेना सहित शत्रु पक्ष पर टूट पड़े, जोधपुर की सेना का संचालन भंडारी रतनचंद कर रहा था। युद्ध में महाराजा गजसिंह ने अद्‌भुत पराक्रम दिखलाया, महाराजा गजसिंह के हाथों घायल भंडारी रतनचन्द ने सेना सहित युद्ध क्षेत्र से भाग निकलना चाहा, परन्तु जैतपुर के ठाकुर स्वरूपसिंह के हाथों मारा गया। इस युद्ध में जोधपुर को काफी हानि उठानी पड़ी। इसके बाद राज्य में अशान्ति और अव्यवस्था उत्पन्न करने वाले विद्रोही सरदारों को भी बलपूर्वक नियंत्रण में लिया। जैसलमेर द्वारा बीकमपुर पर आक्रमण करने पर बीकमपुर की रक्षा की। मराठों द्वारा जोधपुर पर आक्रमण करने पर महाराजा गजसिंह सेना लेकर जोधपुर की सहायता के लिए गए। महाराजा गजसिंह के समय भट्टियों और जोहियों ने उपद्रव मचा रखा था। दाउद पुत्रों ने अनूपगढ़ पर अधिकार कर लिया था। महाराजा को जब ये पता चला तो उन्होंने अनूपगढ़ पर चढ़ाई की। दाउद पुत्रों ने महाराजा का सामना किया परन्तु उन्हें परास्त होकर वहां से भागना पड़ा और अनूपगढ़ पर पुनः बीकानेर का अधिकार हो गया। महाराजा गजसिंह ने जोधपुर द्वारा बीकानेर पर आक्रमण करने के बाद भी अवसर आने पर जोधपुर की हर बार सहायता की, वह उदार हृदय के स्वामी थे, क्षमाप्रार्थी विद्रोही सरदारों को उन्होंने सदैव गले लगाया। वह कभी शाही दरबार में नहीं गए, फिर भी उनका सम्मान वहां ऊंचे दर्जे का था। महाराजा सूरतसिंह बीकानेर शासक गजसिंह के पुत्र थे जो वि.सं. 1844 में बीकानेर के शासक बने। उनके शासक बनने के कुछ काल बाद ही भटनेर के भट्टियों ने उपद्रव करना आरम्भ कर दिया। महाराजा सूरतसिंह ने रावतसर के बहादुरसिंह को सेना सहित भटनेर भेजा। भीषण लड़ाई के बाद भट्टियों को पराजय का सामना करना पड़ा, जाब्ता खां ने क्षमा याचना की, महाराजा ने उसे क्षमा कर दिया। मराठों और जार्ज टामस की संयुक्त सेना ने जब जयपुर पर आक्रमण किया तब सूरतसिंह ने जयुपर की सहायता के लिए 5000 की सेना भेजी। बहावलपुर के शासक बहावल खां द्वारा पीड़ित मौजगढ़ के शासक दाउद पुत्र खुदा बख्श ने महाराजा सूरतसिंह से प्रार्थना की। सूरत सिंह ने उसकी सहायता के लिए बहावलपुर पर आक्रमण किया। बहावलपुर को पराजय का सामना करना पड़ा। बहावलखां को अपना आधा राज्य खुदाबक्श को देना पड़ा और बीकानेर की सेना को 2 लाख रुपए हर्जाने के देने पड़े। वि.सं. 1861 में भटनेर के भट्टियों ने पुनः विद्रोह कर दिया। लम्बे संघर्ष के बाद भट्टियों को अंत में भटनेर का किला छोड़ना पड़ा और उस पर बीकानेर का अधिकार हो गया, यह अधिकार मंगलवार के दिन होने के कारण भटनेर का नाम हनुमानगढ़ रख दिया गया।

त्रिपुरी का कलचुरी - चेदि राजवंश

चन्देल राज्य के दक्षिण में चेदि के कलचुरियों (जिन्हें हैहयवंशी भी कहा जाता है) का राज्य स्थित था, इनकी राजधानी का नाम त्रिपुरी था जो वर्तमान मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में थी। त्रिपुरी के कलचुरी चन्द्रवंशी क्षत्रिय थे, इनके अभिलेखों व ताम्र पत्रों में इन्हें सहस्त्रार्जुन कार्तवीर्य का वंशज बताया गया है। यद्यपि कलचुरी (हैहय) राज्य बहुत प्राचीन था परन्तु उसके बारे में जानने के ऐतिहासिक साधन कम है। इन्होंने अपने नाम का स्वतंत्र संवत् चलाया था, जो कलचुरी संवत् के नाम से प्रसिद्ध था, परन्तु इस संवत् के प्रवर्तक शासक के बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं है। त्रिपुरी के कलचुरियों का श्रृंखलाबद्ध विवरण नवीं शताब्दी से मिलता है।

कलचुरी वंश का प्रथम प्रतापी शासक कोक्कलदेव प्रथम था जो नवीं शताब्दी के मध्य में शासक बना। वह अपने समय का महान सेनानायक था। उसने कन्नौज के प्रतिहार शासक भोज और उसके सामान्तों को परास्त किया। कोक्कल ने तुरुष्क, बंग, कोंकण आदि प्रदेशों पर भी विजय प्राप्त की। बिल्हारी लेख में उसे बड़े आलंकरिक शब्दों में सम्पूर्ण पृथ्वी का विजेता बताया गया है। अनेक युद्धों में उसकी विजय उसे महान योद्धा और कुशल सेनानायक सिद्ध करती है। कोक्कल प्रथम ने चन्देलवंश की राजकुमारी नट्टादेवी से विवाह किया तथा अपनी पुत्री का विवाह राष्ट्रकूट वंश के कृष्ण द्वितीय के साथ किया जिससे कलचुरी राज्य की पश्चिमी तथा दक्षिणी पश्चिमी सीमाएं सुरक्षित हो गईं। कोक्कल के 18 पुत्र थे जिनमें से उसका ज्येष्ठ पुत्र शंकरगण उसके देहान्त के बाद चेदि वंश का राजा बना। उसने दक्षिणी कौशल के सोमवंशी शासक को परास्त किया और अपने छोटे भाई को वहां का राज्यपाल नियुक्त किया। राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण द्वितीय के वेंगी के पूर्वी चालुक्य शासक विजयादित्य तृतीय के विरुद्ध अभियान में शंकरगण कृष्ण द्वितीय के साथ था परन्तु उन दोनों की सम्मिलित सेनाओं को चालुक्यों से परास्त होना पड़ा, विजयी चालुक्यों ने कलचुरी राज्य के एक भाग किरणपुर को नष्ट कर दिया। शंकरगण को इस पराजय से गहरा धक्का लगा। बिल्हारी लेख में शंकरगण को मल्य देश पर विजय का श्रेय दिया गया है। शंकरगण के बाद उसका पुत्र बालहर्ष शासक बना। उसका शासन काल अत्यन्त अल्प रहा। उसकी मृत्यु के बाद उसका भाई व शंकरगण का दूसरा पुत्र युवराज प्रथम शासक बना। युवराज प्रथम एक विजेता था जिसने बंगाल के पाल शासकों को परास्त किया, उसने कलिंग के गंग शासक को भी परास्त किया। चन्देल नरेश यशोवर्मन के साथ हुए युद्ध में युवराज प्रथम को पराजय का सामना करना पड़ा। राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय ने कलचुरी राज्य पर आक्रमण किया। युवराज प्रथम को परास्त होकर कुछ काल के लिए निर्वासित जीवन जीना पड़ा लेकिन युवराज प्रथम ने शीघ्र ही एक शक्तिशाली सेना का गठन कर राष्ट्रकूटों को परास्त कर उन्हें अपने राज्य से खदेड़ दिया। बिल्हारी लेख के अनुसार युवराज प्रथम ने कर्णाट तथा लाट प्रदेश को भी जीता। युवराज प्रथम को साहित्यिक ग्रंथ 'विद्यशालभंजिका' में मालवा का अधिपति भी बताया गया है। युवराज प्रथम के दरबार में कुछ काल के लिए राजशेखर जैसे विद्धान ने आश्रय पाया था और वहीं अपने दो प्रसिद्ध ग्रन्थों 'काव्यमीमांसा' और 'विद्यशालभंजिका' की रचना की। निःसन्देह युवराज प्रथम कलचुरि वंश का ही नहीं बल्कि मध्यकालीन भारतीय शासकों में से एक महान शासक था। **(क्रमशः)**

पूर्व महारावल का देहावसान, अंतिम यात्रा में उमड़ा जनसैलाब

जैसलमेर राजघराने के पूर्व महारावल बृजराज सिंह का 28 दिसम्बर को 52 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आम जनता में सरलता एवं सहृदयता के लिए पहचाने जाने वाले पूर्व महारावल के देहावसान के समाचार से पूरे जैसलमेर में शोक की लहर दौड़ गई एवं 29 दिसम्बर को उनकी अंतिम यात्रा में जैसलमेर शहर एवं आसपास के हजारों लोग उमड़े। सभी जाति समाज की इन हजारों नम आंखों ने यह सिद्ध कर दिया कि हमारी त्यागमयी पूर्वज परम्परा का कितना सम्मान है एवं उसका कोई विकल्प नहीं है। जनता की स्वतः स्फूर्त भीड़ ने देश की वर्तमान व्यवस्था को संदेश दिया कि किसी भी प्रकार का दुष्प्रचार हमारे पूर्वजों की उस उज्ज्वल कीर्ति को धुमिल नहीं कर सकता जो उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर हासिल की थी। उस त्याग के कारण पनपा पारिवारिक भाव आज भी उन महान पूर्वजों के वंशजों को जनता से अपनत्व के बंधन में बांधता है और वह बंधन गाहे बगाहे प्रकट होता रहता है। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

संघ प्रमुख श्री ने अर्पित किए श्रद्धासुमन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के माननीय संघ प्रमुख श्री ने 6 जनवरी को जैसलमेर स्थित जवाहर निवास पहुंच कर दिवंगत महारावल बृजराज सिंह को श्रद्धासुमन अर्पित किए। उन्होंने पूर्व महारावल के पुत्र एवं पूर्व महारानी से मिलकर उन्हें सांत्वना प्रदान की एवं मंदिर पैलेस में पूर्व राजमाता से मिलकर उनके पुत्र के देहावसान पर शोक प्रकट किया। इस अवसर पर उन्होंने पूर्व महारावल को जैसलमेर राजपरिवार की बलिदानी परम्परा का वाहक बताया एवं आम जनता के प्रति उनके पारिवारिक भाव को सराहा।

।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।।

महारावल श्री बृजराजसिंह जी

यदुकुलभूषण भगवान श्रीकृष्ण की वंश परम्परा से जैसलमेर रियासत के 42वें छत्राला यादव पति महारावल श्री बृजराजसिंह जी को उनके असामयिक देवलोक गमन पर हार्दिक श्रद्धांजलि।

हम भगवान श्री कृष्ण से उनकी आत्मा को शाश्वत स्वरूप में विलय करने की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धानवत :

भंवरसिंह साधना	तारेन्द्रसिंह झिनझिनयाली	जोगराजसिंह सिंहड़ार	मनोहरसिंह रामगढ़
सरदारसिंह दव	सुरेन्द्रसिंह मिठड़ाऊ (हरसिद्धि स्टेशनर्स, जैसलमेर)	जसवीरसिंह महेशों की ढाणी (इंडियन आर्मी)	धनपतसिंह मोढ़ा (अधिवक्ता)
देवीसिंह भाटी बालाना (मोहनगढ़)	शम्भुसिंह सोढ़ा (छतांगढ़)	दिनेशपालसिंह बींजराज का तला	जितेन्द्रसिंह पूनमनगर
मुल्तानसिंह बींजराज का तला	विक्रमसिंह बईया (पटवारी)	चन्द्रवीरसिंह खुहड़ी (व.अ.)	डूंगरसिंह दव (छात्रसंघ अध्यक्ष)
रेवंतसिंह छतांगढ (जीआरएस)	लूणसिंह महाबार	कवराजसिंह चांधन	नरेशपाल सिंह तेजमालता

पृथ्वीसिंह जी डेलासर (रजवाड़ी टेंट हाउस चांधन) प्रतापसिंह चांधन

।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।।

संपादकीय

सुविधा और संगठन

प्रायः हम किसी प्राप्ति की चाह में किसी संगठन से जुड़ते हैं। हमारी वह चाह हमारे स्तर के अनुरूप श्रेष्ठ या नेष्ठ हो सकती है लेकिन होती अवश्य है। वह चाह ही हमारी क्रियाशीलता की प्रेरक होती है और हमें किसी संगठन से संबद्ध कर क्रियाशील बनाती है। श्रेष्ठ एवं परिपक्व लोगों की यह चाह भौतिक व व्यक्तिगत न होकर आध्यत्मिक एवं सृष्टिगत हो सकती है लेकिन सामान्य मनुष्य की ऐसी चाह तो भौतिक एवं व्यक्तिगत ही होती है। वह किसी संगठन से जुड़कर ऐसी सुविधाजनक स्थिति को हासिल करना चाहता है जिसके बल पर वह अपने सामान्य जीवन की दिन प्रतिदिन पैदा होने वाली व्यक्तिगत एवं भौतिक चाहों को पूरा कर सके। इस प्रकार प्रायः संगठन से जुड़ने की सामान्य व्यक्ति की प्रारंभिक प्रेरणा वह सुविधाजनक स्थिति हासिल करना ही होता है। सामान्य व्यक्ति की इसी चाह का लाभ उठाकर धूर्त लोग संगठन के नाम पर शोषण चला पाते हैं। पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'समाज चरित्र' की भूमिका में लिखा है कि **'देखा यह जाता है, कि जागरण के नाम पर सभी लोग शोषण चला रहे हैं। जनता से मत प्राप्त कर उनके लिए कुछ भौतिक सुविधाएं दिला देने से ही किसी राजनीतिक दल का उत्तरदायित्व पूर्ण नहीं होता। सुविधाओं को भोगने का संतुलित मन और आचरण बनना भी आवश्यक है, अन्यथा वे सुविधाएं असंगठन और विनाश की अनिवार्य भूमिकाएं बनकर रह जावेंगी।'** पूज्य तनसिंह जी के अनुसार सुविधाओं के आकर्षण के कारण अस्तित्व में आने वाले संगठन का अस्तित्व कायम नहीं रह सकता और ये सुविधाएं ही उसके विनाश की या असंगठन की अनिवार्य भूमिकाएं बन जाएंगी। इस बात को हम नित्य प्रति बनते बिगड़ते संगठनों के उदाहरण से समझ सकते हैं। राजनीतिक दलों के संगठन का विशुद्ध आधार केवल कुछ सुविधाजनक स्थितियां प्राप्त करना रह गया है और जिनको वह स्थिति नहीं मिलती वे उस संगठन में विघटन पैदा करने में तनिक भी देर नहीं करते। प्रायः राजनीतिक पार्टियां अपनी सरकारों में मंत्रिमंडल विस्तार या अपनी संगठनात्मक नियुक्तियों का कार्य उस समय नहीं करती जब निकट भविष्य में कोई चुनाव होने वाला हो क्योंकि उनमें सदैव डर समाया रहता है कि ऐसा करने पर जिनको पद नहीं मिलेगा वे नाराज हो जाएंगे और चुनाव हरवा देंगे। इस प्रकार जिन सुविधाओं की प्राप्ति के लक्ष्य से व्यक्ति संगठन से जुड़ा था उन्हीं के आधार पर वह संगठन से अलग भी हो जाता है। ऐसे अनेक उदाहरण केवल राजनीतिक संगठनों के ही नहीं हैं बल्कि सामाजिक संगठनों में भी बहुतायत में पाए जाते हैं जब सुविधाएं असंगठन एवं विनाश की अनिवार्य भूमिकाएं बनकर पूज्य श्री की बात को सही सिद्ध करती हैं। ऐसे में प्रश्न खड़ा होना स्वाभाविक है कि जब सामान्य मनुष्य प्रायः कुछ प्राप्तियों का लक्ष्य लेकर ही किसी संगठन से जुड़ता है तो फिर विघटन ही होगा, संगठन तो किस प्रकार बन पाएगा? इस प्रश्न का उत्तर पूज्य तनसिंह जी ऊपर लिखित पंक्तियों में ही देते हैं और वह है सुविधाओं को भोगने का संतुलित मन और आचरण बनाना। जब संगठन बनना प्रारम्भ होगा, शक्ति प्रकट होने लगेगी तो यह प्राकृतिक सत्य है कि शक्ति के साथ सुविधाएं भी आएंगी ही। ऐसे में पूज्य श्री का मानना है कि उन सुविधाओं के लिए उत्तरदायी संगठन को सुविधाओं को भोगने का संतुलित मन एवं आचरण बनाने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा होने पर वे सुविधाएं विघटन का कारण नहीं बनेंगी। लेकिन यह काम इतना सरल भी नहीं है। किसी व्यक्ति के मन एवं आचरण को बदलना सरल काम नहीं है। वह तो प्रायः डिगायमान हो ही जाता है। यदि संगठन में काम करने वाले मेरे किसी साथी को कोई सुविधाजनक स्थिति मिल गई है तो मेरी भी अपेक्षा पैदा हो ही जाती है। यदि संगठन के प्रभाव से मेरे किसी साथी का तबादला हो जाता है और मेरा नहीं हो पाता तो मेरी संगठन के प्रति शिकायत पैदा हो ही जाती है क्यों कि मेरा मन और आचरण संतुलित नहीं है। यदि संगठन के किसी व्यक्ति के प्रभाव में किसी की नौकरी लग गई या उसके बच्चे का किसी कॉलेज में प्रवेश हो गया या अस्पताल में कोई काम आसानी से हो गया अथवा और कोई काम हो गया और मेरा नहीं हुआ तो मेरे मन में संगठन के प्रति दुराव पैदा होता है, ऐसा प्रायः हम देखते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति संगठन के प्रति नाराज, निष्क्रिय या तटस्थ हो जाया करते हैं। इसी आशंका को पूज्य तनसिंह जी ने ऊपर प्रकट किया है। उनके अनुसार संगठन का आधार कोई सुविधा होनी ही नहीं चाहिए। कोई संगठन यदि कुछ सुविधाएं दिलाने के नाम पर लोगों को आकर्षित करता है तो वह वास्तव में उस सुविधा की चाह के बल पर अगले व्यक्ति का शोषण ही करता है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ में आने के लिए कभी किसी सुविधा का लालच नहीं दिया जाता। कुछ प्राप्त करने के सपने नहीं दिखाए जाते बल्कि विशुद्ध रूप से सामाजिक पीड़ा के प्रति अपने उत्तरदायित्व बोध को जागृत कर संगठन बनाने की बात की जाती है। यहां संगठन से जुड़ने का आकर्षण कोई सुविधाजनक स्थिति प्राप्त करना नहीं होता बल्कि समाज के प्रति पीड़ा होती है, अपने उत्तरदायित्व का बोध होता है लेकिन क्यों कि श्री क्षत्रिय युवक संघ भी एक संगठन है, एक शक्ति इससे भी स्वभावतः निर्मित होती है। उस शक्ति के कारण इससे जुड़े लोगों के व्यक्तिगत जीवन में भी किसी न किसी प्रकार की सुविधाजनक स्थिति प्रायः बनती ही रहती है। लेकिन ऐसा भी संभव नहीं है कि हर व्यक्ति के साथ वह स्थिति बने ही, ऐसे में अनेक लोगों में शिकायतों का स्फूरण भी प्रायः महसूस किया जाता है जो उनके मन में संगठन से दुराव पैदा करता है। साथ ही जिस व्यक्ति को वह सुविधा मिलती है उसमें भी स्वयं को विशिष्ट समझने की अहंकारात्मक विकृति आने की संभावना बनी रहती है। ऐसे में पूज्य तनसिंह जी की यह बात पुष्ट होती है कि जब तक सुविधाओं को भोगने का संतुलित मन और आचरण नहीं बनता, वे असंगठन की अनिवार्य भूमिकाएं बन ही जाती हैं। मानसिकता की परिपक्वता एवं संतुलित मन व आचरण के लिए संघ का नियमित व निरन्तर सम्पर्क ही इसका एकमात्र उपाय है। इसीलिए संघ ऐसी सुविधाओं के आकर्षण को प्राथमिक स्तर पर ही हतोत्साहित करता है और ऐसी कोई चाह पैदा भी हो तो नियमित व निरन्तर सम्पर्क द्वारा उसे परिमार्जित करने का आमंत्रण अपने कार्यकर्ताओं के सदैव देता रहता है।

जालोर संभाग में प्रांतीय बैठकों की श्रृंखला

जालोर संभाग ने संघ स्थापना दिवस (22 दिसम्बर) से पूज्य तनसिंह जी जयंती (25 जनवरी) तक संघ कार्य को गति देने के लिए केन्द्र की अनुमति से प्रांतीय बैठकों का आयोजन किया। कोरोना प्रोटोकोल के तहत अधिक भीड़ से बचने के लिए अलग-अलग प्रांतों के दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की छोटी-छोटी बैठकें रखी गईं। विगत 10 माह से ऐसी भौतिक बैठकें नहीं हुई थी इसीलिए भौतिक रूप से मिलकर संघ कार्य बाबत एवं व्यक्तिगत रूप से सक्रियता की समीक्षा बाबत ये बैठकें रखी गईं। सभी बैठकों का संचालन संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने किया एवं विगत 10 माह से संभाग में हुए संघ कार्य की जानकारी दी। साथ ही आगामी 25 जनवरी से पूर्व प्रत्येक प्रांत में संघशक्ति, पथप्रेरक के ग्राहक बनाने एवं संघ साहित्य के प्रसार के लक्ष्य के बारे में बताया। सांचोर व रानीवाड़ा प्रांत की संयुक्त बैठक 27 दिसम्बर को राजपूत छात्रावास

रानीवाड़ा में रखी गई। बैठक में प्रांत के 22 स्वयंसेवक शामिल हुए। सभी ने अपनी अपनी व्यक्तिगत समीक्षा प्रस्तुत की एवं संघ स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त नववर्ष संदेश को लेकर चर्चा की गई। बैठक में आगामी 25 जनवरी से पूर्व संघ साहित्य के 30 सेट व 30 यथार्थ गीता वितरण तथा 140 संघशक्ति, पथप्रेरक के ग्राहक बनाने का लक्ष्य लिया गया। सिरोही प्रांत की बैठक 28 दिसम्बर को सादलवा में रखी गई। यहां भी उपरोक्तानुसार चर्चा की गई एवं लक्ष्य लिए गए। बैठक के बाद सादलवा गांव व सिरोही शहर में सम्पर्क किया गया। 29 दिसम्बर को पाली प्रांत की बैठक पाली में रखी गई जिसमें प्रांत प्रमुख, मंडल प्रमुख एवं अन्य दायित्वाधीन स्वयंसेवक उपस्थित हुए। यहां भी 25 जनवरी तक संघ साहित्य के 30 सेट वितरण व 100 ग्राहक बनाने का लक्ष्य लिया गया। 2 जनवरी की शाम जालोर प्रांत के दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की बैठक नागणेची मंदिर प्रांगण पांचोटा में रखी गई। बैठक में वयोवृद्ध स्वयंसेवक अर्जुनसिंह मालपुरा सहित सभी दायित्वाधीन स्वयंसेवक उपस्थित हुए। बैठक में संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने उपरोक्तानुसार विषय स्पष्ट किया। उपस्थित स्वयंसेवकों ने वे संघ का क्या काम कर सकते हैं यह व्यक्तिशः बताया और उसे करने का विश्वास दिलाया। चर्चा में यह बात उभर कर आई कि संघ में हर व्यक्ति के लिए अपनी रूचि अनुसार काम उपलब्ध है। हम हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक अभावों की जिस दृष्टिकोण से पूर्ति करना चाहते हैं उसकी पूरी जानकारी संघ के नेतृत्व को देकर उनसे मार्गदर्शन लेकर कार्य करना चाहिए। ऐसा करने पर हमारा वह काम हमारे लिए संघ कार्य बन जाएगा और हमारा आत्म विश्वास बढ़ा कर हमें संघ की कृपा का पात्र बनाएगा। हमारे में से प्रत्येक को अपनी रुचि व क्षमतानुसार कार्य लेना चाहिए। 3 जनवरी को प्रातः अल्पाहार के बाद सभी विसर्जित हुए।

(पृष्ठ एक का शेष)

जैसलमेर

शिव

कमजोर वर्ग...

हमने देखा कि राजस्थान की दोनों राजनीतिक पार्टियों ने अपनी प्रदेश कार्यकारिणी बनाई। हमारे को हासिए पर रख दिया गया है, जैसे हम यहां के नागरिक ही नहीं हैं, ऐसी परिस्थिति में फाउंडेशन समाज की आवाज उठाए। फाउंडेशन का अर्थ नींव का पत्थर होता है जो स्थायी और दृढ़ होना चाहिए लेकिन साथ ही उपयोगी भी होना चाहिए। 12 जनवरी विवेकानंद जी का दिन माना जाता है, उन्होंने किस प्रकार काम किया इस बात से प्रेरणा लेकर संकल्प लेवें कि न रुकेंगे, न झुकेंगे चाहे पीढ़ियां लग जावें। हम किसी के खिलाफ नहीं हैं पर बुराई के खिलाफ हैं। राजपूतों के साथ तो रहना ही है लेकिन जो कौमें हमेशा हमारे साथ खड़ी रही हैं, उनके साथ भी खड़े रहना है। जहां हम रहते हैं वहां हमारी प्रतिभा प्रकट होनी चाहिए, जो भी संकट में हो उसके साथ खड़े रहें। लेकिन स्पष्ट रहें कि व्यक्तियों, पार्टियों और संगठनों से हमारी कोई दुश्मनी नहीं है लेकिन जहां विष है उसका तो विनाश ही करना है। वर्चुअल माध्यम के अलावा भौतिक रूप से अनेक स्थानों पर कार्यक्रम रखे गए। जयपुर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, जायल, सीकर, सुमेरपुर, जालोर, सांचोर, रानी, पीपाड़ शहर, भीलवाड़ा, छोटी रानी, सरवाड़, बायतु, शिव, चोहटन, बालोतरा, सिवाना, सोजत, जैसलमेर, गुड़ामालानी, सिणधरी आदि स्थानों पर श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें स्थानीय समाज बंधु एवं सहयोगी शामिल हुए।

जोधपुर

जयपुर

बनासकांठा में सम्पर्क

बनासकांठा प्रांत में चल रहे साप्ताहिक सम्पर्क अभियान के तहत 3 जनवरी को शैलसिंह वलादर व वीरूसिंह वलादर के फार्म हाउस पर पारिवारिक बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों में अजीतसिंह कुणघेर, शैलसिंह वलादर, भगवानसिंह वलादर आदि ने संघ दर्शन की जानकारी दी।

महेन्द्रसिंह का जेएनयू में प्रवेश

संघ के स्वयंसेवक महेन्द्रसिंह सेखाला को देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय जवाहर लाल नेहरू विवि में बी.ए. ऑनर्स में प्रवेश मिला है। महेन्द्रसिंह को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

भूल सुधार

विगत चार जनवरी 2020 के अंक में पृष्ठ 3 पर लगे विज्ञापन में **श्री भगवान सिंह तंवर, प्रधान, पंचायत समिति, रामदेवरा** को श्री **भगवतसिंह तंवर (रामदेवरा) प्रधान, पंचायत समिति सांकड़ा** पढ़ा जावे।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय साथी

हनुवंतसिंह गादेरी

के पदोन्नत होकर

सहायक उपनिरीक्षक पुलिस (एएसआई) *बनने पर*

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

हनुवंतसिंह गादेरी

शुभेच्छु :

मूलसिंह बेतिना | हीरसिंह लोड़ता | मोहब्बतसिंह धींगाणा | जेतसिंह भीमजी का गांव | चन्द्रसिंह धोलिया बारू

कर्णसिंह लोड़ता | बहादुरसिंह सारंगवास | लालसिंह सिराणा | श्रीपालसिंह सलोदरिया | देवीसिंह मोरखाना

आशापुरा चेरीटेबल ट्रस्ट की बैठक

गुजरात के बनासकांठा क्षेत्र के थराद, वाव और सूईगाम क्षेत्र के राजपूतों की बैठक आशापुरा चेरीटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में 27 दिसम्बर को पीलुड़ा में आयोजित की गई। बैठक में थराद, वाव व सुईगाम तहसीलों के राजपूत समाज से सेवानिवृत सरकारी व अर्द्धसरकारी कर्मचारियों का अभिवादन किया गया। नव नियुक्त कर्मचारियों का भी सम्मान किया गया। कक्षा 10 व 12 तथा उच्च शिक्षा प्राप्त प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में गजेन्द्रसिंह वाव, अर्जुनसिंह थराद, भाजपा जिलाध्यक्ष गुमानसिंह माडका, पूर्व तालुका प्रमुख उम्मेदसिंह इढाटा, सिद्धराज सिंह पीलुड़ा, अजीतसिंह कुणधेर आदि गणमान्य लोगों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

पायलट के रूप में चयन

जयपुर के सिरसी रोड स्थित रामविहार निवासी रणजीतसिंह राठौड़ के पुत्र प्रदीप सिंह राठौड़ का भारतीय तटरक्षक बल में असिस्टेंट कमाण्डेण्ट में चयन हुआ एवं 19 दिसम्बर को हैदराबाद एयरफोर्स अकेडमी में प्रशिक्षण के बाद देश के रक्षा मंत्री द्वारा उन्हें पायलट बैज पहनाया गया। इसी प्रकार हरियाणा के मेवात जिले में स्थित उजीना ग्राम निवासी अशोक छौंकर की पुत्री कुमारी वर्षा छौंकर का भी भारतीय वायुसेना में फ्लाईंग ऑफिसर के रूप में चयन हुआ है। इसी क्रम में हरियाणा के भिवानी जिले के खरक कला निवासी पवनसिंह परमार की पुत्री सुश्री ईशा परमार का भी भारतीय वायुसेना में फ्लाईंग ऑफिसर के रूप में चयन हुआ है। पथप्रेरक इन सभी होनहारों को बधाई प्रेषित करता है।

डॉ. बबीता सिंह सम्मानित

अलवर में जिला एपिडेमियोलोजिस्ट के रूप में कार्यरत रही डॉ. बबीता सिंह पत्नी डॉ. जालमसिंह अग्रोहा को कोरोना काल के दौरान श्रेष्ठ सेवाओं के लिए फर्स्ट इंडिया न्यूज चैनल एवं अन्य संस्थाओं द्वारा जिला स्तर पर 11 जनवरी को सम्मानित किया गया। डॉ. बबीतासिंह वर्तमान में जयपुर में सेवारत हैं। इनके पति डॉ. जालमसिंह श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय समिति में सहयोगी हैं।

विमलेंद्र सिंह बने अध्यक्ष

हाल ही में संपन्न तहसीलदार सेवा की प्रदेश कार्यकारिणी के चुनाव में श्री विमलेंद्र सिंह राणावत को प्रदेश अध्यक्ष चुना गया है। मूलतः पाली जिले के निवासी श्री राणावत श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के सहयोगी हैं।

युवाओं का स्नेहमिलन

जोधपुर स्थिति संघ कार्यालय 'तनायन' में 2 जनवरी को शहर की शाखाओं में आने वाले युवा स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन रखा गया। रात्रि विश्राम सभी ने कार्यालय में ही किया एवं अपने अपने संघ जीवन के अनुभव साझा किये। 3 को रविवारीय शाखा के बाद सभी विसर्जित हुए।

प्रवेश चालू– सीधे 10वीं करें

- सरकारी ओपन बोर्ड से घर बैठे बिना T.C. किसी भी उम्र में आधार कार्ड से सीधे 10वीं करें।
- 10वीं पास सीधे 12वीं आर्टस्, कॉमर्स, सांइस से करें।
- स्कूल छोड़े महिला, पुरूष के शिक्षित होने का अवसर।
- नर्सिंग, फार्मेसी करने के लिए सांइस से 12वीं करने का अवसर।
- 5,6,7,8,9वीं फेल या पास सीधे 10वीं करें।(NIOS कोड 170347)

NIOS भारत सरकार का सरकारी ओपन बोर्ड

आदर्श सीनियर सैकेण्डरी स्कूल
सोलंकियातला, तह. शेरगढ़, जिला जोधपुर

सांगसिंह समन्वयक
9783202923,
8209091787

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान

स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board

Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

जौहर भवन में हुआ सम्मान समारोह एवं अभिनन्दन

चित्तौड़गढ़। समाज के भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट के पद एवं शिक्षा विभाग में प्रथम श्रेणी अध्यापक पद चयनित होने पर रविवार 27 दिसम्बर को गांधीनगर स्थित जौहर भवन में सम्मान समारोह एवं अभिनंदन कार्यक्रम रखा गया जिसमें संस्थान द्वारा सम्मान एवं अभिनन्दन किया गया। भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट के पद पर चयनित होने पर राजदीप सिंह राणावत पिता पुष्पेन्द्रसिंह राणावत ठिकाना नारेला, महावीर सिंह चौहान पिता वीरेन्द्रसिंह चौहान ठिकाना साकड़ों का खेड़ा, अक्षयराजसिंह चुण्डावत पिता अमरसिंह चुण्डावत ठिकाना थाना एवं शिक्षा विभाग में प्रथम श्रेणी अध्यापक पद पर चयनित होने पर बसंतसिंह चौहान पिता नारायणसिंह चौहान ठिकाना सिंघोला को उन सभी के माता-पिता के साथ ही संस्थान एवं समाज के महानुभावों द्वारा माल्यार्पण कर शॉल ओढा, प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

(पृष्ठ दो का शेष)

पूर्व महारावल... महारावल साहब के देहावसान पर हर तरफ से आई दुःखद प्रतिक्रिया ने इस बात को पुनः पुष्ट किया। जनता एवं उनका यह संबंध वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से शासक और जनता का नहीं था। वे तो स्वयं देश में नई व्यवस्था लागू होने के बाद जन्मे थे और उस दिन उमड़ी भीड़ में भी अधिकांश लोग ऐसे ही थे लेकिन फिर भी जैसलमेर की जनता ने आज भी उनके लिए अपने पारिवारिक मुखिया की सी प्रतिक्रिया दी, यह जनता की उस त्याग परम्परा के प्रति नमनशीलता है जिसके वाहक महारावल बृजराजसिंह जी थे। उनके अंतिम संस्कार के बाद निरन्तर आम एवं खास लोगों की दुःखद प्रतिक्रिया प्रकट हो रही है। लोग उनके आवस पर जाकर अपनी संवेदना प्रकट कर रहे हैं वहीं अलग-अलग स्थानों पर शोक सभाएं आयोजित कर भी श्रद्धांजलि दी जा रही है। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिजनों को इस आघात को सहने की शक्ति प्रदान करें।

(पृष्ठ एक का शेष)

हीरक जयंती...

जिसके तहत प्रत्येक संभाग में आज से पूर्व लग चुके शिविरों के स्थलों की यात्रा कर वहां स्नेहमिलन रखे जाएंगे जिनमें संघ

दर्शन एवं हीरक जयंती बाबत चर्चा की जाएगी। बैठक का संचालन करते हुए संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि इस बैठक के बाद सभी संभाग प्रमुखों को अपने-अपने संभागों में आगामी एक माह में संभागीय बैठक आयोजित करनी है जिसमें प्रत्येक स्वयंसेवक हीरक जयंती से संबंधित कोई न कोई काम अवश्य करे, यह सुनिश्चित करना है। ऐसे काम क्या क्या हो सकते हैं, इस बारे में विस्तार से चर्चा की गई एवं उन्हें सूचीबद्ध किया गया। बैठक में तय किया गया कि राजस्थान और गुजरात के जिन क्षेत्रों में संघ का काम न्यून है। वहां अन्य क्षेत्रों के स्वयंसेवक सम्पर्क कर संघ का संदेश प्रसारित करेंगे। संघ दर्शन को प्रसारित करने के उद्देश्य से पूज्य तनसिंह जी का साहित्य अधिकतम लोगों तक पहुंचाने के लिए अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। माननीय संघ प्रमुख श्री ने प्रत्येक स्वयंसेवक को न्यूनतम पांच पुस्तकें निःशुल्क भेंट करने का निर्देश दिया। पूज्य तनसिंह जी के दर्शन को समझने एवं समझाने के लिए विचार गोष्ठियों का आयोजन करने का निर्णय लिया। सोशल मीडिया का पर्याप्त सकारात्मक उपयोग करने का निर्देश दिया गया ताकि इस माध्यम से अधिकतम लोगों तक हमारा संदेश पहुंचाया जा सके। इसी क्रम में माननीय महावीरसिंह जी सरवड़ी एवं माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा की साप्ताहिक उद्बोधन माला का आयोजन किया जाएगा जिसे संघ के सोशल मीडिया अकाउंट्स पर प्रसारित किया जाएगा। हीरक जयंती वर्ष की कार्य योजना के अतिरिक्त शाखा, शिविरों आदि अन्य सांघिक कार्यक्रमों को लेकर भी चर्चा की गई। कोरोना काल में बंद हुई मैदानी शाखाओं को पुनः प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। वर्चुअल शाखाओं की समीक्षा की गई एवं उन्हें और अधिक उपयोगी कैसे बनाया जा सकता है इसे लेकर चर्चा की गई। विद्यालयी एवं विश्वविद्यालयी परीक्षाओं के कार्यक्रम आने के उपरान्त ग्यारह दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर की तारीखें तय कर ली जाएंगी, उससे पूर्व प्रत्येक संभाग में एक-एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने का निर्देश दिया गया। शिविरों एवं शाखाओं में कोरोना प्रोटोकाल का ध्यान रखने को लेकर भी चर्चा की गई। प्रत्येक संभाग में एक-एक रिकॉर्ड प्रभारी बनाने का निर्देश दिया गया ताकि सांघिक कार्यक्रमों के फोटो, वीडियो, ओडियो एवं अन्य दस्तावेजों को समुचित रूप से संरक्षित रखा जा सके। संघ के अनुषंगिक संगठनों के कार्य को लेकर भी चर्चा की गई। इतिहास अध्ययन, संघशक्ति मासिक के लिए लेख लिखने, समाचार भेजने, ग्राहक सदस्यता बढ़ाने आदि को लेकर भी चर्चा की गई। 9 जनवरी की रात्रि को पाबूजी राठौड़ की पड़ का वाचन किया गया जिसमें राजस्थान एवं गुजरात से आए सभी स्वयंसेवक इतिहास को संरक्षित रखने की इस प्राचीन विद्या से परिचित हुए। 10 जनवरी को बैठक के समापन के पश्चात प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया जिसमें माननीय संघ प्रमुख श्री ने पत्रकारों को हीरक जयंती से संबंधित जानकारी दी एवं उनके प्रश्नों के उत्तर देते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ लड़ाई की नहीं संघर्ष की बात करता है। समाज को जोड़ने की बात करता है। हीरक जयंती वर्ष के लिए उत्साह से लबरेज हो सभी सहयोगी अपने गंतव्यों को लौटे।

अमर सिंह ऊण को मातृशोक

श्रीमती गवर कंवर

जालोर जिले में संघ के स्वयंसेवक अमरसिंह ऊण की माताजी **श्रीमती गवर कंवर** का 8 जनवरी को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परमेश्वर से उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

प्रो. रूपसिंह सोलंकी का देहावसान

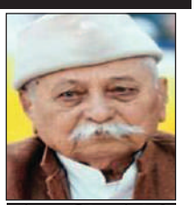
प्रो. रूपसिंह सोलंकी

श्रद्धेय आयुवानसिंह जी लिखित पुस्तक **'मेरी साधना'** का गुजराती भाषांतर व विवेचन करने वाले **प्रो. रूपसिंह सोलंकी** का 2 जनवरी को देहावसान हो गया। वर्तमान में आप उस गुजराती विवेचन का हिन्दी रूपांतर कर प्रतिमाह संघशक्ति के लिए भेज रहे थे। आप लींबड़ी के राजपूत बोर्डिंग हाउस के प्रबंधन में भी मार्ग दर्शन करते रहते थे। पथप्रेरक परमेश्वर से उनको अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

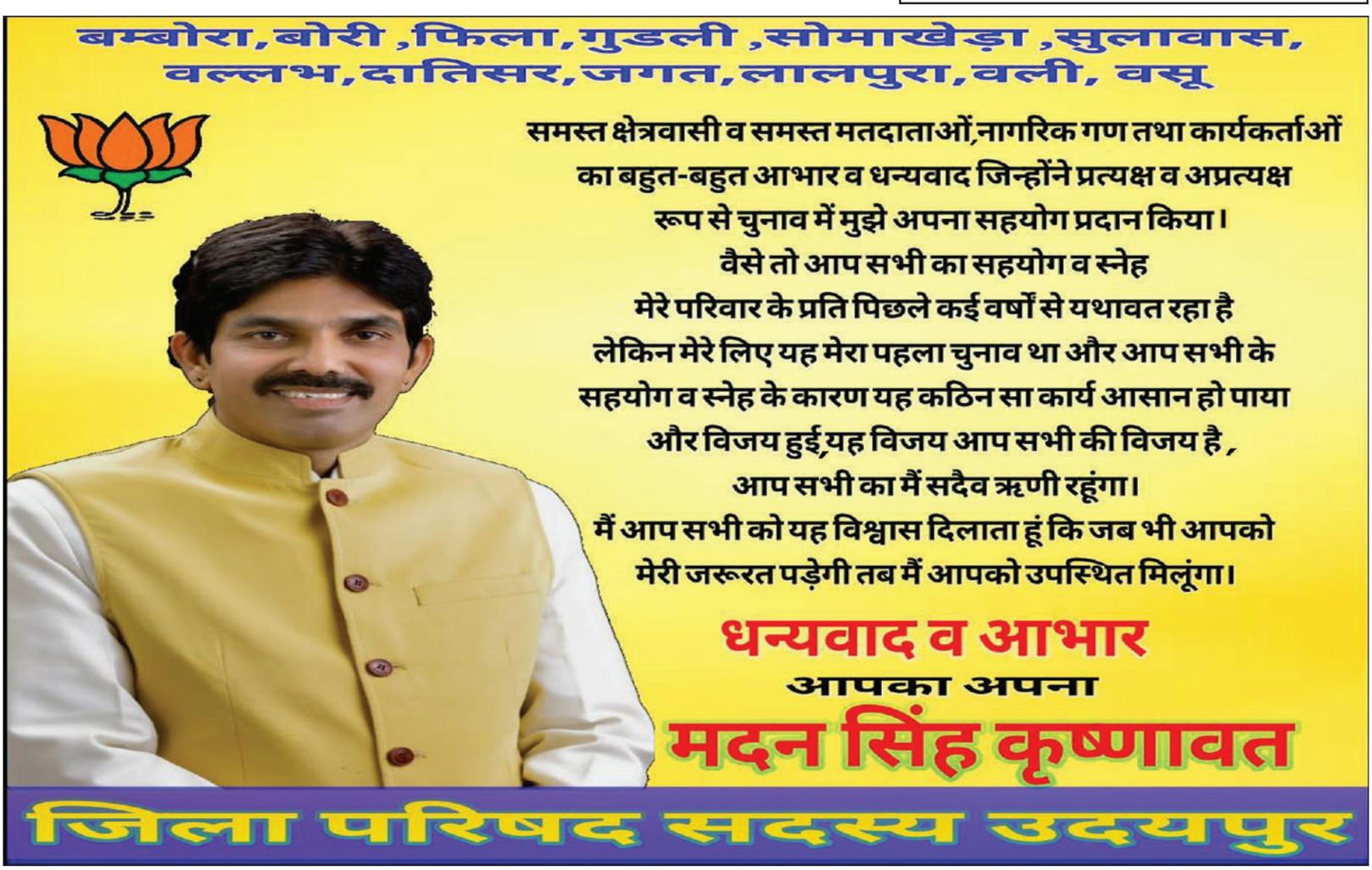

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीमती प्रकाश कंवर

प्रधान, पंचायत समिति
चितलवाना

पंचायती राज चुनाव 2020 में **श्रीमती प्रकाश कंवर** धर्मपत्नी श्री हिन्दूसिंह दूठवा को **पंचायत समिति चितलवाना (जालोर)** से **प्रधान** निर्वाचित होने पर एवं **श्रीमती छैल कंवर** धर्मपत्नी श्री राणसिंह कारोला को **पंचायत समिति सांचौर (जालोर)** से निर्विरोध उप प्रधान निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

श्रीमती छैल कंवर

उप प्रधान, पंचायत समिति
सांचौर

शुभेच्छु :

महेन्द्रसिंह कारोला	खंगारसिंह कारोला	कोजराजसिंह चारणीम	किशोरसिंह ऐलाणा
विजेन्द्रसिंह कीलवा	सरूपसिंह केरिया	देवीसिंह तेतरोल	जितेन्द्रसिंह चौरा
गोपालसिंह झाब	चन्दनसिंह आकोली	जेठूसिंह सिवाड़ा	भेरूपालसिंह दासपा
मनोहरसिंह अध्यापक कारोला	भरतसिंह छोटी विरोल	हितेन्द्रसिंह झाब (हाल औरंगाबाद)	Advt प्रेमसिंह अचलपुर
जालमसिंह चारणीम	शैतानसिंह (K) सिवाड़ा	कल्याणसिंह डभाल	जितेन्द्रसिंह मरठवा

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org